"प्राण फूँकता सब में पानी"

प्रदीप कुमार उनियाल

जल जगत को बहुत जरूरी,
सब की इच्छा करता पूरी।

प्राण फूँकता सब में पानी,
कभी करें न इसकी हानी।

ऐसा कृत्य करे न कोयी,
अमृत जल जो गंदा होयी।

अशुद्ध जल से रोग हैं बढ़ते,
संकट के मार्ग तब चढ़ते।

जल से भाप फिर बनते बादल,
पुनः बरसते बनकर के जल।

पीना, नहाना.....भोजन बनाना,
खेती-बाड़ी..... कपड़े धोना

शुद्धि इसकी बहुत जरूरी,
इच्छायें तभी होती हैं पूरी।

स्वच्छ जल में औषधीय तत्व,
हम सब समझें उसका महत्व।

जल तत्व बचाना समझें धर्म,
हर मानव जाने इसका मर्म।

मिलता वर्षा से जो जल,
व्यर्थ बहे न एक भी पल।

घर-घर में हों बर्षाती टैंक,
उनको समझें जल का बैंक।

धरती में लगायें पौध सघन,
मिलकर के जितने भी हैं जन।

फूल-फल अन्न पैदा होते तब,
पर्याप्त जल पौधों को मिलता जब।

नदी तालाब का जो सतही जल,
उसमें कभी न गिरायें मल।

व्यर्थ में जल कभी न बहायें,
संरक्षण कर सुख सुविधायें पायें।

जल उद्योगों का आधार,
पापों को धुलता है हर वार।

ये खींचते वर्षा के जो मेघ,
बरसते तब धरती में अति वेग।

विद्युत उत्पादन का आधार है जल,
बनता है जिससे सुखमय कल।

भू-जल का भण्डार बढ़ायें,
देश को उन्नति के शिखर चढ़ायें।

सही ढंग से जो अपनाते,
जल के सारे लाभ हैं पाते।

संपर्क करें:
प्रदीप कुमार उनियाल
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की।